

क. परिचय (यहोशू 1:1-3):

❖ मूसा और यहोशू

- यहोशू के पहले अध्याय में मूसा का ग्यारह बार उल्लेख किया गया है, और उसका नाम पूरी पुस्तक में बार-बार आता है।
- दोनों अगुओं के बीच कई समानताएं हैं:
 - (1) परमेश्वर उनके सामने प्रकट हुआ (निर्गमन 3:2-5; यहोशू 5:13-14)
 - (2) उनसे अपने जूते उतारने को कहा गया (निर्गमन 3:5; यहोशू 5:15)
 - (3) परमेश्वर ने उनसे वादा किया कि वह उनके साथ रहेगा (निर्गमन 3:12; यहोशू 1:5)
 - (4) उन्होंने फसह का पर्व मनाया (निर्गमन 12:21-23; यहोशू 5:10)
 - (5) वे जल से होकर सूखी भूमि पर गए (निर्गमन 14:21-22; यहोशू 3:14-17)
 - (6) एक के साथ मन्ना आया, दूसरे के साथ मन्ना बन्द हो गया (निर्गमन 16:4-5, 31; यहोशू 5:11-12)
 - (7) उन्होंने देश की जासूसी करने के लिए जासूस भेजे (गिनती 13:1-3; यहोशू 2:1)
- यद्यपि यहोशू का पहला अध्याय इस्राएल के दो महान अगुओं के बीच अदला-बदली का वर्णन करता है, परन्तु दोनों में से कोई भी इस पुस्तक का वास्तविक नायक नहीं है। सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति स्वयं परमेश्वर है, जिसके वचन पुस्तक को शुरू करते हैं, और जिसका नेतृत्व प्रमुख विषय है। इस बात में कोई संदेह नहीं है कि इस्राएल का असली अगुआ कौन था।

❖ पुस्तक की संरचना

- यहोशू की पुस्तक उन वादों की पूर्ति को प्रस्तुत करती है जो परमेश्वर ने इस्राएल से तब किए थे जब वह उन्हें मिस्र से बाहर लाया था, अर्थात् उन्हें कनान देने के लिए। प्रस्तावना (अध्याय 1) और पुस्तक दोनों को चार प्रमुख खंडों में विभाजित किया गया है:
 - (1) कनान के लिए पार जाना → यहोशू 1:1-9 → यहोशू 1:1-5:12
 - (2) कनान पर अधिकार लेना → यहोशू 1:10-11 → यहोशू 5:13-12:24
 - (3) भूमि का बंटवारा करना → यहोशू 1:12-15 → यहोशू 13:1-21:45
 - (4) व्यवस्था का पालन करके सेवा करना → यहोशू 1:16-18 → यहोशू 22:1-24:33

ख. यहोशू का विशेष कार्य (यहोशू 1:4-9):

❖ प्रतिज्ञाओं का उत्तराधिकारी बनना

- यहोशू 1:3 में, परमेश्वर भविष्यवाणी के वर्तमान काल में बोलता है। वह कनान के बारे में ऐसे बोलता है मानो वह इस्राएल को पहले ही दे दिया गया हो। इसका अर्थ है कि परमेश्वर ने उन्हें विजय की सफलता का पूरा आश्वासन दिया था।
- फिर वह उन्हें उन सीमाओं की याद दिलाता है जहाँ तक कब्जा करना है (यहोशू 1:4): यरदन नदी (पूर्व) और भूमध्य सागर (पश्चिम) के बीच की पट्टी, रेगिस्तान (दक्षिण) से फरात नदी (उत्तर) तक।
- फिर वह यहोशू की ओर मुड़ता है और उसे आश्वासन देता है कि यदि वह मजबूत और साहसी होगा, तो कोई भी उसके खिलाफ खड़ा नहीं हो सकेगा (यहोशू 1:5-6)।
- लेकिन जीत यहोशू के अपने प्रयासों में नहीं, बल्कि परमेश्वर की उपस्थिति में निहित थी। उसने उसे आश्वासन दिया, जैसा कि वह हम सभी को आश्वासन करता है: "मैं तुम्हारे संग रहूँगा" (यहोशू 1:5; मत्ती 28:20)।

❖ शक्ति और साहस

- युद्ध में यहोशू से शक्ति और साहस मांगने से पहले (यहोशू 1:9), परमेश्वर ने उससे व्यवस्था का पालन करने के लिए शक्ति और साहस मांगा (यहोशू 1:7)।
- आज भी यही बात लागू होती है। परमेश्वर हमसे उसकी व्यवस्था का पालन करने का प्रयास करने के लिए कहता है (प्रकाशितवाक्य 14:12)। इसके लिए हमारी ओर से बहुत साहस की आवश्यकता है।
- अपनी ओर से, वह वादा करता है कि "जहाँ जहाँ तू जाएगा वहाँ वहाँ तेरा परमेश्वर यहोवा तेरे संग रहेगा।" (यहोशू 1:9), और हमें उस लड़ाई से लड़ने में मदद करेगा जिसमें हम लगे हुए हैं। यह कोई शारीरिक लड़ाई नहीं है, बल्कि "प्रधानों से, और अधिकारियों से, और इस संसार के अन्धकार के हाकिमों से और उस दुष्टता की आत्मिक सेनाओं से है जो आकाश में हैं।" (इफिसियों 6:12)। ऐसा करने के लिए, उसने हमें आवश्यक हथियार प्रदान किये हैं (इफिसियों 6:13-17)।
- सफलता की कुंजी परमेश्वर पर पूरा भरोसा रखना है। और ऐसा करने के लिए, हमें हर दिन उससे जुड़ने की ज़रूरत है (इफिसियों 6:18)।

❖ विशेष कार्य की सफलता

- दिव्य दृष्टिकोण से मिली सफलता, मानवीय दृष्टिकोण से मिली सफलता से मेल नहीं खाती है।
- इस संसार में क्षणिक सफलता दिव्य और मानवीय नियमों को तोड़कर प्राप्त की जा सकती है, परन्तु सच्ची और शाश्वत सफलता नहीं मिल सकती (यहोशू 1:8)।
- अगर हम परमेश्वर की व्यवस्था में बताए गए सिद्धांतों और मूल्यों का पालन करें, तो हम सफल होंगे। लेकिन क्या यह कर्मों से मिलने वाला उद्धार नहीं है?
- बिल्कुल नहीं। विश्वास और व्यवस्था एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक हैं (रोमियों 3:31)। जब हम व्यवस्था की बात करते हैं, तो हम उस तरीके की बात कर रहे होते हैं जिस तरह हमें जीना चाहिए, न कि उस तरीके की जिस तरह हमें बचाया जा सकता है। परमेश्वर के साथ हमारा रिश्ता उसकी इच्छा के प्रति हमारी आज्ञाकारिता में प्रकट होता है।